रंगों के मनोवैज्ञानिक एवं लाक्षणिक प्रभाव

डॉ० राखी कुमारी

प्राचार्य, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार

ईमेल-rakheegraphiccac@gmai-com

सार

रंग एक शब्द है जिसे जब हम देखते हैं, तब वह हमारी आत्मा में उतर जाती हैं। रंग हमारी मन- संवेदना को छूते हैं। हमें आकर्षित करते हैं। उनकी अलग-अलग विशेषताएं हैं। जैसे उष्ण, शीतल तटस्थ आदि। रंग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। इसका संस्कृत में अर्थ "वर्ण या रंग" होता है। हिंदी भाषा में यह शब्द संस्कृत और फारसी से लिया गया है। संस्कृत में "रंग" शब्द "रज्ज" (तंर) धातु से बना है जिसका अर्थ रंगना। फारसी में "रंग" शब्द "रंग" (तंदह) है जिसका अर्थ भी रंग होता है। रंगों के मनोवैज्ञानिक एवं लाक्षणिक प्रभाव होते हैं। प्राचीन संस्कृतियों में रंगों का उपयोग अक्सर विभिन्न स्थितियों के इलाज और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए किया जाता था। उन्होंने विभिन्न आध्यात्मिक प्रभाव में भी भूमिका निभाई है। प्रकाश में सात रंग होते हैं। ये सातों रंग इंद्रधनुष या पानी के बुलबुले में दिखाई पड़ते हैं, जिसे हम प्रिज्म की सहायता से भी देख सकते हैं। कलाकार और रंग का गहरा और भावनात्मक संबंध है। वह रंगों के माध्यम से दुनिया को एक नया रूप प्रदान करते हैं। पूर्व में लोक कलाओं के चित्रण में प्राकृतिक तरीके से प्राप्त रंग का प्रयोग किया जाता था। समय परिवर्तन के साथ-साथ रंगों के प्रयोग में भी काफी परिवर्तन होने लगा।

शब्द कुंजी: मन-संवेदना, रज्ज, मनोवैज्ञानिक, लाक्षणिक, गुणवत्ता, अपारदर्शी, आध्यात्मिक, रंग द्रव्य, भावनात्मक, तंत्रिका, ब्रांड, सृजन कौमार्य, उन्मत्तता, पाश्वभूमि, अपरिपक्व, विश्वसनीयता।

परिचय:

रंग प्रकाश की एक घटना या दृश्य धारणा है जो हमें विभिन्न वस्तुओं को एक दूसरे से अलग करने में मदद करती है। प्रकाश में सात रंग होते हैं। ये सातों रंग इंद्रधनुष या पानी के बुलबुले में दिखाई पड़ते हैं, जिसे हम प्रिज्म की सहायता से भी देख सकते हैं। इन सात रंगों को VIBGYOR भी कहते हैं।

रंग मनोविज्ञान

रंग मनोविज्ञान की वैज्ञानिक खोज अपेक्षाकृत नई है। लेकिन प्राचीन संस्कृतियों में रंगों का उपयोग अक्सर विभिन्न स्थितियों के इलाज और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए किया जाता था। उन्होंने विभिन्न आध्यात्मिक प्रथाओं में भी भूमिका निभाई। रंग मनोविज्ञान कला चिकित्सकों को कलाकृतियों में रंग से भावनाओं और अर्थों को व्यक्त करने में मदद करता है। उत्पादों, ब्रांडों और वेबसाइट के डिजाइन में रंग मनोविज्ञान का प्रयोग किया जाता है उपभोगताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए। रंग ब्रांड को विशिष्ट एवं एक अलग पहचान देता है जिससे ब्रांड अधिक रुचिकर और भीड़ में ही पहचाना जा सकता है। विभिन्न रंगों का अपना अलग अर्थ होता है जिसे ध्यान में रखकर करना चाहिए। कलाकारों और इंटीरियर डिजाइनरों का मानना है कि रंग व्यक्ति की भावनाओं को प्रभावित करता है। कलाकार पाब्लो पिकासो ने एक बार कहा था 'रंग विशेषताओं की तरह, भावनाओं के परिवर्तनों का अनुसरण करते हैं।

हरा रंग :

हरा रंग मिश्र रंग है। यह पीले और नीले के मिश्रण से बना है इसका मुख्य गुण शीतल है। लेकिन उष्ण और शीतल के मिश्रण से बनने के कारण कभी-कभी उसे रंग संगती में उष्णता का प्रभाव देता है। और शीतल रंग के साथ प्रयोग करने से शीतलता को बढ़ाता है। इसमें दोनों गुण विद्वान है। आग के लौ

में भी हरा रंग दृष्टिगत होता है। यह रंग सभी के साथ मिल जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार दोस्ताना स्वभाव के व्यक्ति का रंग हरा होता है जो सभी परिवेश में संगति बैठा लेता है।

हरे रंग की पृष्ठभूमि पर की गयी चित्रकारी आकर्षक होती है। किसी भी रंग में हरा रंग मिलाने से शीतल और आकर्षक होता है। लाल रंग की तीव्रता को कम करने के लिए हरे रंग को मिलाते है। हरे रंग में काला रंग मिलाने से काई रंग बनता है जो हरा की तुलना में अधिक शीतल होता है। यदि 'धरती पुत्र', 'कृषक कन्या', 'कृषक जीवन', मालिन आदि का चित्रण करना हो तो हरे रंगों का प्रयोग मानव कृति में करते हैं। हरे पत्तियों के कारण ही फूल आकर्षक और खूबसूरत दृष्टिगत होते हैं। समुद्र का पानी हरा दिखता है जो इसकी गहराई का आभास कराता है। बुध ग्रह का प्रतीक पत्थर हरे रंग का होता है। सुख और समृद्धि के लिए हरे रंग की पन्ने की अंगूठी पहना जाता है जो लगातार सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं उसे एवरग्रीन कहते हैं। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में हरे रंग का प्रयोग किया गया है जो समृद्धि का प्रतीक है। हरा रंग से हरियाली प्रकट होता है जैसे जंगल, खेत, बाग-बगीचा, फुलवारी एवं श्रावण का महीना इस रंग के विभिन्न शेड है जैसे चटनी, धानी, खाकी हरा, चटक हरा, समुद्री हरा, मोर पंखी हरा, काई हरा, सुआ हरा आदि। धनधान्य समृद्धि की देवी अन्नपूर्णा भी हरे वस्त्रो में ही सजी होती है।

पूर्व से ही माता या देवी से पीड़ित बच्चों को नीम की पत्तियों पर सुलाया जाता है ताकि शरीर का दाह शांत हो। आंखों के ऑपरेशन के बाद हरे रंग की पट्टी, अस्पताल में हरे परदे, ऑपरेशन करते समय डॉक्टर का एप्रन भी हरे रंग का होता है। हरा रंग विभिन्न रोगों जैसे इन्फेक्शन के रोग को दूर करने तथा रंग शोधक में सहयोग करता है।

हरड़, बहेड़ा, आंवला, हरी सब्जी तथा क्लोरोफिल में हरी किरणों के तत्व होते हैं। यह शरीर के गंदे एवं जहरीले तत्वों को निकालने वाले अंगों को शक्ति प्रदान करते हैं। जिससे शरीर की गंदगी दूर होती है। हरे रंग की बोतल में पानी भरकर सूर्य प्रकाश में कुछ दिन रखकर पानी को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह बहुत गुणकारी होता है। पेट अथवा आंतों के छाले में तथा हाई बीपी में खाली पेट हरे पानी का प्रयोग लाभदायक है। आंखों की हर बीमारी में हरे रंग के पानी से आंख धोने से या आंखों में डालने से बहुत लाभ होता है।

हरे रंग के विपरीत गुण भी हैं :-

कच्चे फलों का रंग जैसे कच्चा आम, कच्चा संतरा, कच्चा केला आदि अपरिपक्व होता है।

लाल रंग:

लाल रंग प्राथमिक रंग है जो उष्ण प्रकृति का हैं। यह बहुगुणी वाला है। यह उष्णता, तीव्रता, आकर्षक और उन्मत्तता बढ़ा सकता है। आसक्ति, अभियान, नशा, श्रृंगार आदि को भी व्यक्त करता है। यह रंग सामाजिक धार्मिक, दैनिक तथा उत्सवी होने के कारण स्वास्थ्य और उत्साह- वृद्धि की दृष्टि से जितना लाभदायक होता है उतना ही हानिकारक भी है। परंतु कलाकार इस लाल रंग के समूचे प्रभावरूपों को आत्मसात् करके उसका शुभ प्रयोग भी कर सकता है।

चित्र में विरक्ति दिखाने के लिए गेरुआ रंग, उदास काला लाल रंग दुख, दरिद्रता और चिंता को प्रदर्शित करता है। हरे रंग के पृष्ठभूमि पर लाल रंग का बिंदु उत्साह और समृद्धि का एहसास कराता है। लाल रंग वात्सल्य को भी व्यक्त करने में प्रयोग किया जाता है। माता-पिता अपने बच्चों को मेरा लाल, मेरा लल्ला, लल्लन, ललनवा आदि से संबोधित करते हैं। रेलवे पोर्टल की शर्ट और पगड़ी का रंग तुरंत पहचाने जाने के लिए लाल रखा जाता है। लाल झंडी का प्रयोग गाड़ी रुकवाने में प्रयोग किया जाता है। खतरे को दिखाने के लिए लाल रंग का प्रयोग किया जाता है। डाक के डिब्बो, रंग मंच का पर्दा भी लाल रंग का ही होता है

चूने और छार के सहयोग से लाल रंग बनता है। पीले रंग में नींबू या सोडा को मिलने से भी लाल रंग बनता है। यह रंग फल- फूल या मिट्टी से भी प्राप्त किया जाता है। लाल रंग दूर से ही पहचाना जा सकता है क्योंकि इसमें ज्यादा आकर्षण शक्ति होती है। व्यावहारिक रूप से सभी वर्ग के लोग इसे पसंद करते हैं। इसका प्रभाव अन्य रंगों के साथ अलग-अलग होता है। लाल मिर्च में तीखापन होता है। लाल रंग को शुभ माना जाता है। इसलिए सभी मांगलिक कार्य में इसका प्रयोग होता है। सुहागन स्त्री का श्रृंगार सिंदूर, बिंदी, होठों पर लाली, पैरों में आलता आदि सभी लाल होते हैं। यह रंग सभी रंगों का राजा होता है। बहुत से मुहावरे लाल रंग से संबंधित है जैसे लाल बुझक्कर, लाल मुंह का बंदर, बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम आदि।

अत्यधिक क्रोध में मानव का चेहरा लाल हो जाता है। लाल बल्ब की रोशनी में नहीं सोना चाहिए यह खतरनाक होता है। कफ प्रधान रोगों को दूर करने एवं शक्तिदायक होता है केरी, खजूर, शहद, अजवाइन, लहसुन एवं लौहभस्म में लाल किरणों के तत्वों का समावेश होता है। लाल रंग बहुत गर्म है तथा नारंगी कम। अत: पीने के लिए नारंगी रंग का प्रयोग करना चाहिए किंतु बाहरी प्रयोग जैसे तेल मालिश अथवा लाल रंग की रोशनी अधिक गुणकारी होता है। सर्दी के दर्द पुरानी खांसी, दमा, निमोनिया आदि में छाती पर लाल तेल की मालिश करना एवं लाल रोशनी लेना लाभदायक है। मोच जोड़ों के दर्द कमर व गर्दन के दुखने पर लाल रोशनी एवं लाल तेल अत्यधिक लाभदायक होता है। कान से मवाद बहने पर भी लाल तेल कान में डालने तथा लाल रंग की रोशनी देने से लाभ होता है। टीवी की गांठ पर लाल तेल लगाने से भी लाभ होता है।

काला रंग:

काला रंग प्रकाश किरण के सभी रंगों को सोख लेता है और एक भी रंग परावर्तित नहीं करता इसलिए वस्तु का रंग काला नजर आता है। यह उष्ण रंग है। काला रंग तुरंत ध्यान केंद्रित कर लेता है। छोटे बच्चों को नजर ना लगे इसलिए काला टीका लगाया जाता है ताकि बुरी नजर वाले का ध्यान पहले उस पर केंद्रित हो। काला रंग अंधेरा, रात और अमावस्या को तो व्यक्त करता ही है साथ ही ज्ञान के अंधेरे अर्थात अज्ञान, सुख का अंधेरा अर्थात दु:ख, मृत्यु, शोक और उदासीनता के लिए प्रयोग किया जाता है।

समाचार पत्र, पत्रिका, पुस्तकों को काले रंग में छापा जाता है ताकि उस पर ध्यान जा सके चित्रकार द्वारा की गई चित्रकारी में काले रंग के प्रयोग से गहराई डेप्थ का एहसास होता है। काले रंग की पाश्वभूमि पर गहरा नीला, बैगनी, लाल, हरे रंग सुसंगत दिखाते हैं जबकि सफेद, नारंगी, पीला आदि विरोधी। यह रंग कालिख से प्राप्त होता है। किसी भी रंग में काला रंग मिलाने से उस रंग का गहरा तान (shades) प्राप्त होता है। कृष्ण, काला, श्यामला, स्याह, धूमिल, सांवला, काली, चितकबरा आदि। कुछ चित्रकारों का मत है कि काले रंग का प्रयोग सीधे नहीं करना चाहिए उसमें अन्य कोई रंग मिलाकर करना चाहिए। काले रंग से कुछ वाक्य समाज में प्रचलित है। जैसे- काला बाजार, काला साया, दाल में काला, काला पैसा, काला दिल आदि। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार काले रंग से शनि ग्रह प्रसन्न होते हैं। गाल पर काला तिल, आंखों में काजल आदि सौंदर्य को बढ़ाता है।

पीला रंग :

पीला रंग प्राथमिक रंग है। यह उष्ण प्रकृति का है। बैगनी का विरोधी और नारंगी रंग का सुसंगत होता है। सृष्टि के पहले बह्मांड का रंग अंडे के तरल श्वेत-पीले रंग जैसा ही माना जाता है। सूर्य ग्रह का रंग पीला है। यह परिपक्वता को दर्शाता है। जैसे पके आम, पके केले, पका नींबू आदि। पीले उबटन से त्वचा में निखार आता है। पीला रंग चैतन्य, मांग्ल्य सृजन, परिपक्वता, ज्ञान, समृद्धि, आरोग्य और उल्लास का प्रतीक है। इसके अलावा यह द्वेष, ईर्ष्या, द्रोह, पाप, ज्वर, संकट का प्रतीक है।

डरावना और तकलीफदेह का भाव प्रकट करने के लिए कलाकार पीले में काला का मिश्रण करके प्रयोग करते हैं। पीला रंग हल्दी की गांठ, पीली मिट्टी, कुछ विशेष पेड़ के छाल से प्राप्त किया जाता है। गुजरात में 'पिवरी' नामक मिट्टी पाई जाती है उस मिट्टी से दीवारों पर पुताई की जाती हैं। चट्टानों के बीच में एक पीले रंग का पदार्थ पाया जाता है जिससे येलो आकर (Yellow ochre) बनाया जाता है। पलाश के फूल से नारंगी, सुनहरा रंग सोने से प्राप्त किया जाता है। भारतीय लघु चित्रों में सुनहरे रंगों का प्रयोग देखने को मिलता है। पुनर्जागरण काल में यूरोप में सुनहरे रंग का एक लेयर लगाकर व्यक्ति चित्र (Portrait) चित्रित किए जाते थे।

नीला रंग :

नीला रंग किन्हीं भी रंगों के मिश्रण से तैयार न होने वाला लाल और पीले रंग की तरह प्राथमिक रंग है। यह शीतल प्रवृत्ति का है। काला रंग के बाद यह सबसे गहरा रंग है। काले रंग में नीला रंग मिलाने पर काले रंग को और गहराई प्राप्त होती है। इसमें विभिन्न रंगों को मिलाकर विभिन्न शेड (टोन) प्राप्त किया जा सकता है। यह रंग शीतल शांत है इसलिए संस्थाओं की रिसेप्शनिस्ट महिलाएं और अक्सर नीले वस्त्रो का प्रयोग करते हैं। उनके कमरों की दीवार एवं अन्य वस्तुएं नीले रंग के आसपास होते हैं। थकान को कम करने

में नीला रंग सहयोगी होता है। सफेद रंगों के वस्त्रो में नील डाला जाता है। लिखते समय काला और लाल रंग के स्याही से आंखें थक जाती है इसलिए नीला स्याही का प्रयोग किया जाता है। खुबसूरत महिलाओं की बड़ी-बड़ी आंखों की नीलिमा दर्शकों को आकर्षित करती है। रंगमंच और सिनेमा की अभिनेत्री पलकों पर नीले पाउडर का प्रयोग करती है। भगवान शंकर द्वारा विष पीने के उपरांत उनका कंठ नीला हो जाता है इसलिए उन्हें नीलकंठ भी कहा जाता है। कलाकार अपने चित्रों में हल्के नीले रंग का प्रयोग उत्तेजक, उत्साही और लुभावनापन को दिखाने के लिए करते हैं। मध्य छटा वाला नीले रंग का प्रयोग गंभीर शांत और संयमी तथा गहरा नीला का प्रयोग उदासीनता, जहरीलापन को व्यक्त करने के लिए करते हैं। चुड़ैल और भूतों के चित्रण में गहरा नीला का प्रयोग किया जाता है। प्रसिद्ध कलाकार पाब्लो पिकासो 1900 से 1904 के बीच नीला और नीले हरे रंग का के शेड्स में मूल रूप से मोनोक्रोम चित्र बनाए।

नीला रंग नीलम पत्थर की तरह व्यक्ति के शुभ होने पर ऐश्वर्य प्राप्त करता है अन्यथा अध्यात्म की ओर ले जाता है। शनि ग्रह के लिए नीला पत्थर पहना जाता है। नीले रंग को पसंद करने वाला व्यक्ति चंचल होता है। नीले बल्ब की रोशनी में सोने से नींद अच्छी आती है। नींद खुलने के बाद ताजगी महसूस होती है। नीला रंग पीत प्रधान रोगों को दूर करने वाला एवं शांतिदायक रंग है। संतरा, नींबू, क्लोरोफर्म, नीलम आदि में नीले रंग की किरणों के तत्वों का समावेश होता है। नीली बोतल का पानी ठंडक देने वाला, प्यास बुझाने वाला, भीतरी एवं बाहरी रक्तस्राव को रोकने वाला एवं ज्वर को घटाने वाला है। नीले तेल की मालिश दिमागी काम करने वाले के लिए टॉनिक है। मच्छर, बिच्छू आदि के दंश एवं जलने पर नीला तेल लगाने से एवं कान दुखने पर नीले तेल को डालने से लाभ मिलता है।

सफेद :

सफेद रंग शांति एवं सत्य का प्रतीक है। यह प्रकाश युक्त हल्का तथा कोमल है तथा शुद्ध रंगों की श्रेणी में आता है। यह मानसिक विकास दूर करता है और मन को भी शांति देता है। यह जिस रंग में भी मिलाया जाए उस रंग के स्वभाव को कोमलता प्रदान करता है। कुछ संस्कृतियों में सफेद रंग को मृत्यु के साथ जोड़ा जाता है जबकि अन्य में इसे पवित्रता के साथ। सूर्य का रंग भी सफेद है। जब सूर्य आकाश में ऊंचा होता है तो वह सफेद दिखाई देता है। अंतरिक्ष से देखने पर सूरज सफेद रंग का दिखाई देता है क्योंकि वहां वायुमंडलीय प्रभाव नहीं होता है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य की रोशनी को अधिक दूरी तय करनी पड़ती है इसलिए हमें सूर्य लाल या नारंगी दिखाई देता है।

निष्कर्ष :

रंग प्रकाश की एक घटना है या दृश्य धारणा है जो हमें विभिन्न वस्तुओं को एक दूसरे से अलग करने में मदद करती है। रंग द्रव्य (Pingment) अघुलनशील रंगीन पदार्थ है। जिसमें से कुछ तंत्रिका रूप में पाए जाते हैं। किसी रंग द्रव्य का वास्तविक रंग और चमक उस प्रकाश की मात्र पर निर्भर करती है। जिसे वह अवशोषित करता है और जिसे परावर्तित करता है। अर्थात अपने ऊपर गिरने वाले प्रकाश को किसी अन्य रंग में बदलकर प्रतिबिंबित करता है। जैसे लाल रंग का रंग द्रव्य अन्य सभी रंगों को अपने में सोख लेता है और लाल को प्रतिबिंबित करता है। रंग एक शक्तिशाली संचार उपकरण है जो मनोदशा को प्रभावित तो करता ही है, शारीरिक प्रतिक्रियाओं को भी प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. दृश्यकला के मूलभूत सिद्धांत, "डॉ० हृदय गुप्त" मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2013, पृ. सं.-66, 78
2. मिथिला की भित्तिचित्रण- परम्परा 'डॉ० राखी कुमारी' आदित्य पब्लिकेशन "2021" पृ. सं.122
3. ललित कला के आधारभूत सिद्धांत मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती' मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2013, पृ. सं.-81,84
4. चित्रकला और समाज, भाऊ समर्थ, सेतु प्रकाशन प्रा. लि. 2020 पृ.सं.-95-99,103,116
5. आरोग्यनिधि भाग-1 संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-5,पृ.स. 156,157,158,
6. गुगल का सहयोग भी लिया गया है।